एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

ड्रैगन फ्रूट – किसानो की आय में बढ़ोत्तरी का जरिया

(*पल्लवी सोनी, डॉ. राजश्री गाइन एवं मनोज कुमार साहू)
इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: pallavisoniaka@gmail.com

ड्रैगन फ्रूट (*Hylocereous undatus*) जिसे भारत में प्रायः "कमलम" के नाम से भी जाना जाता है, राज्य सरकार एवं केंद्र सरकार दोनों के लिए आकर्षण का मुद्दा बना हुआ है। गुजरात और हरियाणा सरकार की देखा-देखी केंद्र सरकार ने भी अब ड्रैगन फ्रूट जिसे सुपर फ्रूट भी कहा जाता है, की खेती के लिए प्रोत्साहन देना का फैसला किया है। वर्त्तमान में इस फसल की खेती लगभग ३००० हेक्टेयर भूमि में की जा रही है, किन्तु आगामी ५ वर्षो में इस फल की खेती ५०,००० हेक्टेयर भूमि में की जाने की संभावना है।

ड्रैगन फ्रूट एक्सोटिक फ्रूट की श्रेणी में गिना जाता है, विश्वस्तर पर वियतनाम देश इस फल का प्रमुख उत्पादक एवं निर्यातक है। वियतनाम के अलावा यह विदेशी फल संयुक्त राज्य अमेरिका, मलेशिया, थाईलैंड, ताइवान , चीन, ऑस्ट्रेलिया, इज़राइल और श्रीलंका में भी उगाया जाता है। भारत में इस फल की खेती मुख्य रूप से गुजरात, हरियाणा, महाराष्ट्र, नागालैंड, मिजोरम, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, केरल, आंध्रप्रदेश एवं अंडमान और निकोबार द्वीप में की जा रही है। इसके उत्पादन में भारत का मिजोरम राज्य शीर्ष पर है। भारत वर्तमान में लगभग १५,४९१ टन ड्रैगन फ्रूट का आयात कर रहा है, और इसमें चीन और वियतनाम के उत्पादन की बराबरी करने की क्षमता है। चीन में ड्रैगन फ्रूट की खेती ४०,००० हेक्टेयर में एवं वियतनाम में ६०,००० हेक्टेयर भूमि में की जा रही है। मिशन फॉर इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट ऑफ़ हॉर्टिकल्चर (MIDH) के तहत ड्रैगन फ्रूट पर क्षेत्र विस्तार २०२१-२२ में शुरू किया गया था, और विभिन्न राज्यों में लक्षित क्षेत्र ४१३३ हेक्टेयर है स्वीकृत लक्ष्य क्षेत्र मिजोरम, नागालैंड, गुजरात, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, असम, उत्तरप्रदेश, मणिपुर, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश राज्य में स्थित है।

ड्रैगन फ्रूट मूल रूप से दक्षिणी मेक्सिको और मध्य अमेरिका से है, और यह कैक्टसी परिवार से समबंधित है। इस फल को मुख्यता पिथाया, पिताया और स्ट्रॉबेरी पियर के नाम से भी जाना जाता है। देखने में काफी आकर्षक लगने वाले इस फल में बाहर की ओर स्पाईकस और अन्दर की और काले रंग के बीज होते है। "ड्रैगन फ्रूट" इस फल का नाम इसके ड्रैगन जैसे आकर की वजह से पड़ा है, इसकी खाल पर बने स्केल्स ड्रैगन जैसे लगते है और यह खाने में नाशपाती और किवी फ्रूट के स्वाद का अनुभव कराता है। स्वाद के अनुसार यह दो प्रकार का होता है खट्टा और मीठा एवं रंग क आधार पर यह तीन प्रकार के होते है, पहला जिनका छिलका गुलाबी और गुदा सफेद होता है, दूसरा जिनका छिलका और गुदा दोनों लाल रंग का होता है, तीसरा जिनका गुदा सफेद और छिलका पीले रंग का होता है।

ड्रैगन फ्रूट की खेती में छत्तीसगढ़ का स्थान

छत्तीसगढ़ उद्यानिकी फसलो का क्षेत्रफल, उत्पादन और उत्पादकता रिपोर्ट २०१९-२० के अनुसार छत्तीसगढ़ के अंतर्गत कुल २,५८,६३० हेक्टेयर में बागवानी फलों की फसले उगाई जाती है। जिससे मिलने वाला कुल उत्पादन २५,४८,९३० मेट्रिक टन का है, और उत्पादकता क्षमता ९.८६ मेट्रिक टन प्रति

हेक्टेयर की है। ड्रैगन फ्रूट की बात करे तो यह फल छत्तीसगढ़ में कुल १७७ हेक्टेयर क्षेत्र में किया जा रहा है जिससे मिलने वाला कुल उत्पादन ११६६ मेट्रिक टन का है। छत्तीसगढ़ में इसकी उत्पादकता ६.५९ मेट्रिक टन प्रति हेक्टेयर है। राज्य में सबसे अधिक उत्पादन करने वाला जिला रायपुर २६ हेक्टेयर क्षेत्र में ३९० मेट्रिक टन का उत्पादन करता है, एवं रायगढ़ के अधीन ५२ हेक्टेयर क्षेत्र दर्ज है, जोकि क्षेत्रफल में शीर्ष स्थान पर है। हाल ही में छत्तीसगढ़ के कई जिले जैसे बस्तर, राजनंदगांव और कांकेर में इसकी खेती में विकल्प में रूचि देखने को मिली है।

सुपर फ्रूट्स की सुपर पॉवर

- ड्रैगन फ्रूट औषधीय प्रभाव वालो गुणों से भरपूर होता है।
- यह फल विटामिन्स, फाइबर और मिनरल्स का समृध्द स्रोत है।
- यह मधुमेह के मरीजो के लिए बहुत फायदेमंद है।
- इसमें एंटीऑक्सीडेंट्स और विटामिन C प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।
- विटामिन C की पर्याप्त मात्रा लेने से कैंसर का खतरा भी कम होता है।
- इसमें बीटा कैरोटीन एवं लायकोपीन भी मौजूद होते है जोंकि कैंसर और हृदय सम्बंधित बिमारियों को कम करने में उपयोगी है।
- ड्रैगन फ्रूट में कैलोरी बहुत कम होती है इसके साथ-साथ ये आयरन, जिंक, कैल्शियम, पोटैशियम, जैसे पोषक तत्वों से भरपूर है।
- यह फल (लाल एवं सफ़ेद वैरायटी) इन्सुलिन रेसिस्टेंट कम करने में लाभकारी है।
- इसमें प्रोबायोटिक फाइबर होता है जोकि आंतो क लिए लाभकारी है।
- यह पाचन क्रिया में सहयोगी की तरह काम करता है।

विश्व एवं घरेलु बाजार में ड्रैगन फ्रूट की बढती मांग

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुसार ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए ज्यादा पानी की जरुरत नहीं होती है।
- यह प्रायः शुष्क एवं अर्धशुष्क- क्षेत्रो में उगाया जाता है।
- लवणीय मृदा में भी इसका उत्पादन फायेदेमंद है।
- यह फल भारत के ठंडे राज्यों / इलाको के अलावा हर क्षेत्र में अधिक उपज देने में सक्षम है।
- यह फल उपजाऊ और बंजर दोनों तरह की भूमि में की जा सकती है।
- तीसरे वर्ष के अंत में औसत उपज लगभग १०००० -१२००० किलो प्रति हेक्टेयर होती है।
- खेती के ५ वर्षो के भीतर ही अधिकतम उत्पादन की क्षमता होती है।
- यह २० साल तक उपज बनाये रखता है।

राज्य सरकार द्वारा उठाये गए महत्वपूर्ण कदम

- गुजरात सरकार ने हाल ही में इस विदेशी फल का नाम बदलकर "कमलम" कर दिया है, और इसकी खेती करने वाले किसानो के लिए प्रोत्साहन राशि की घोषणा भी की है।

- महाराष्ट्र सरकार ने (MIDH) मिशन फॉर इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट ऑफ़ हॉर्टिकल्चर के अधीन श्रेष्ट गुणवत्ता वाले रोपण सामग्री और सब्सिडी प्रदान करके राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में ड्रैगन फ्रूट की खेती को बढावा देने की पहल की है।
- हरियाणा सरकार की तरफ से किसानो को ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए नेशनल मिशन ऑफ़ हॉर्टिकल्चर (NHM) के अंतर्गत १.२ लाख रूपए प्रति एकड़ सब्सिडी दी गई है।
- तेलंगाना टुडे के अनुसार तेलंगाना के कई किसानो को ड्रैगन फ्रूट की खेती से फायदा पंहुचा है, इसका मुख्य कारण राज्य सरकार द्वारा दी गई आर्थिक मदद एवं प्रोत्साहन है।
- महाराष्ट्रा के अरवल्ली जिले के कुछ किसानो ने १५ हेक्टेयर भूमि में ड्रैगन फ्रूट की खेती कर करोड़ो का मुनाफ़ा कमाया है।

भारत सरकार द्वारा किये गए महत्वपूर्ण फैसले

हाल ही में ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए भारत सरकार ने अपनी रूचि दिखाते हुए कई आवश्यक फैसले लिए हैं। यह फल पोषक तत्वों से भरपूर और उगाने में आसान है, यही कारण है की सरकार किसानो को ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए प्रोत्साहित करती हुई नजर आ रही है।

- ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए सरकार ने किसानो को वृतीय सहायता देने का आश्वासन दिया है। वियतनाम की जीडीपी (GDP) में ड्रैगन फ्रूट के निर्यात की अहम भूमिका है, इस सूचना ने भारत सरकार को भी ड्रैगन फ्रूट की खेती क लिए प्रभावित किया है।
- कृषि मंत्रालय ने हाल में ही एक कॉन्क्लेव (नेशनल कॉन्क्लेव ऑफ़ ड्रैगन फ्रूट) आयोजित किया था। इस कॉन्क्लेव का मुख्य उद्देश्य इस फल के क्षेत्र, उत्पादन, ब्रांडिंग एवं मार्केटिंग को बढ़ावा देना है। साथ ही साथ यह भी सुनिश्चित करना है, की ड्रैगन फ्रूट की खेती से किसानो की आय में वृद्धि हो।
- आगामी वर्षो में सरकार राज्यों और किसानो को (MIDH) मिशन फॉर इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट ऑफ़ हॉर्टिकल्चर के अंतर्गत केंद्र लक्ष्य आधारित मदद दे सकता है।
- फ़ूड प्रोसेसिंग मंत्रालय की सहायता से प्रोसेसिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर भी तैयार किया जा सकता है, जिससे ड्रैगन फ्रूट के प्रोसेसड फूड्स उत्पाद में भी भारत की अग्रिम भूमिका हो।

सारांश

विश्व और भारत में ड्रैगन फ्रूट की बढती मांग किसानो की आय में बढोत्तरी का एक बहुत अच्छा विकल्प है। उत्पादकों के लिए लाभप्रदता और मौसम में लगातार परिवर्तन दुनिया भर में ड्रैगन फ्रूट की खेती की ओर ध्यान आकर्षित करती है। भारत में यह फल ४०० रूपए/किलो में उपलब्ध है। आने वाले समय में इसका मूल्य १०० रूपए/किलो तक करने का उद्देश्य है। परन्तु अभी भी इस फल की खेती से जुडी जानकारी एवं फायदे सीमित है। एक तरफ जहाँ किसान अन्य फलों की खेती के बारे में जागरूक है, वहीं दूसरी तरफ ड्रैगन फ्रूट की खेती की शर्तो एवं नियमो से वंचित है। आने वाले समय में इस फल की कीमत में गिरावट की जरुरत है, तभी जाकर यह आम आदमी की पहुच में होगा। इस खेती में प्रारंभिक निवेश अधिक है, लेकिन यह एक साल के भीतर तेजी से रिटर्न देता है। फलों की लाल और गुलाबी किस्मे बेहतर उपज देती है।